प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विश्वविद्यालय में कृषि नवाचार की ओर कुलपति द्वारा फसल अनुसंधान केंद्र का निरीक्षण

पंतनगर। 17 सितम्बर 2025। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा डा. नारमन ई. बोरलॉग फसल अनुसंधान केंद्र पर खरीफ मौसम में विभिन्न फसलों पर लगे शोध परीक्षणों का संबंधित फसल वैज्ञानिकों, निदेशक शोध डा. सुभाष चंद्र, संयुक्त निदेशक डा. एस.के. वर्मा के साथ अवलोकन किया। सभी को संबोधित करते हुए उन्होंने मौसम की चुनौतियों के मध्य अच्छी ऊपज, रोग एवं कीटों के प्रति अवरोधी तथा पोषक तत्वों से भरपूर किस्मों के विकास पर बल दिया। उन्होंने कहा कि प्रदेश और देश के विकास में कृषि की अहम भूमिका है और पंतनगर विश्वविद्यालय के योगदान को सदैव याद रखा जाएगा। अतः हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम पूरे समर्पण के साथ टीम के रूप में शोध कार्य को करें। 3पी कॉन्सेप्ट पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि किसी भी शोध संस्थान की पहचान प्रोडक्ट/टेक्नोलॉजी, पेटेंट और पब्लिकेशन से ही होती है। उन्होंने वातावरण को शुद्ध रखने और अच्छे मानव स्वास्थ्य के लिए जैविक और प्राकृतिक खेती के उद्देश्यों के मद्देनजर शोध करने और इन विधाओं के व्यापक प्रचार प्रसार पर बल दिया। साथ ही श्री अन्न (मोटे अनाज) के ऊपर भी शोध को और अधिक बल देने का सुझाव दिया। मोटे अनाज के गुणवत्तापूर्ण बीज की अधिक मात्रा में उत्पादन हेतु सुझाव दिया। नई विकसित किस्मों का बीज मिनीकिट के रूप में किसानों को किसान मेले में वितरित करने का भी सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि जो भी शोध कार्य हो रहे हैं, को समय से लिपिबद्ध किया जाना अति आवश्यक है। साथ ही लीक से हटकर कुछ नया करने के लिए सोचना और नए विचार लाना अत्यंत आवश्यक है। किसान और समाज के द्वारा किस प्रकार की तकनीक की मांग है, उसके अनुरुप तकनीक विकास और टीम भावना के साथ कार्य करने की आवश्यकता है।

निदेशक शोध ने कहा कि शोध परीक्षणों का अनुश्रवण आवश्यक है इससे शोध की गुणवत्ता में वृद्धि होती है। संयुक निदेशक, फसल अनुसंधान केंद्र द्वारा अवगत कराया गया कि इस केंद्र का अब तक विभिन्न फसलों की कुल 225 किस्मो का विकास किया जा चुका है। गेहूं की कल्याण सोना और सोनालिका प्रजातियां जिनका हरित क्रांति लाने में अहम भूमिका रही है, इसी केंद्र से विकसित की गई थी और विश्वविद्यालय की कुल 14 किस्में लैंडमार्क से सम्मानित हैं। वहां पर उपस्थित सभी वैज्ञानिक उनके द्वारा किए जा रहे शोध पर प्रकाश डाला। आनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग के चावल प्रजनक द्वारा प्रक्षेत्र प्रदर्शन में लगी धान की विभिन्न किस्मों की विशेषताओं के बारे में कुलपति को अवगत कराया गया। फसल अनुसंधान केंद्र पर मडुआ और झिंगोंरा की किस्मों के प्रदर्शन का भी कुलपति द्वारा अवलोकन किया गया और प्रसन्नता व्यक्त की गई। इस अवसर पर निदेशक संचार डा. जे.पी. जायसवाल और पूर्व निदेशक शोध डा. ए.एस. नैन भी उपस्थित थे।